बौद्ध धर्म- संस्थापक महात्मा बुद्ध

महात्मा बुद्ध-

जन्म- 563 ई॰पू॰ कपिलवस्तु (लुम्बिनी)

पिता - शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्य गण के मुखिया)

माता - महामाया (रामग्राम के कोलिय गण से सम्बंधित)

↳ मृत्यु - बुद्ध के जन्म के 7वें दिन

पालन पोषण - मौसी प्रजापति गौतमी

शादी - 16 वर्ष की अवस्था में यशोधरा से (शाक्य गण की थी)

पुत्र - राहुल (एक और बंधन)

⇒ शहर भ्रमण के दौरान देखे गए दृश्य-
1- वृद्ध व्यक्ति
2- रोगी
3- एक शव
4- सन्यासी

⇒ अन्तिम दृश्य को देखकर मन सन्यास की ओर प्रवृत्त हुआ और 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया।

⇒ बौद्ध साहित्य में गृह त्याग की घटना- **महाभिनिष्क्रमण**

गृह त्याग के पश्चात- सर्वप्रथम मुलाकात - गुरु आलार कालाम (वैशाली के)
तत्पश्चात - राजगृह के "रुद्रक रामपुत्र"

⇒ गया में निरंजना (फल्गु) नदी के किनारे पंचवर्गीय ब्राह्मण भिक्षु के साथ तपस्या पीपल के वृक्ष के नीचे 6 वर्ष की।

⇒ सुजाता द्वारा दिए गए खीर को खाकर तपस्या भंग की।

फिर समाधि - 49वें दिन ज्ञान की प्राप्ति। और बुद्ध कहलाए।
गया - बोधगया
वृक्ष - बोधिवृक्ष (शैव वंशीय कट्टर शासक शशांक ने कटवा दिया)

जन्म, ज्ञान और मृत्यु का दिन - वैशाख पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा)

• प्रथम शिष्य - गया में ही तपस्सु एवं मल्लिक (बंजारे)

⇒ इसके बाद सारनाथ गए, पंचवर्गीय ब्राह्मण भिक्षु को प्रथम उपदेश दिया
इस घटना को धर्मचक्रप्रवर्तन कहते हैं।

⇒ बौद्ध संघ की स्थापना - सारनाथ में

⇒ आनंद के कहने पर संघ में प्रवेश पाने वाली प्रथम महिला - प्रजापति गौतमी (वैशाली में)

वर्षावास - प्रथम - सारनाथ
सर्वाधिक - कोशल महाजनपद की राजधानी - श्रावस्ती में (25 वर्ष)

निजी परिचारक - आनंद

चत्वारि आर्य सत्यानि - दुख है
दुख का कारण है - कर्म कारण्य सिद्धान्त (प्रतीत्यसमुत्पाद)
दुख को रोका जा सकता है
दुख को रोकने के उपाय हैं। (अष्टांगिक मार्ग बताया गया है)

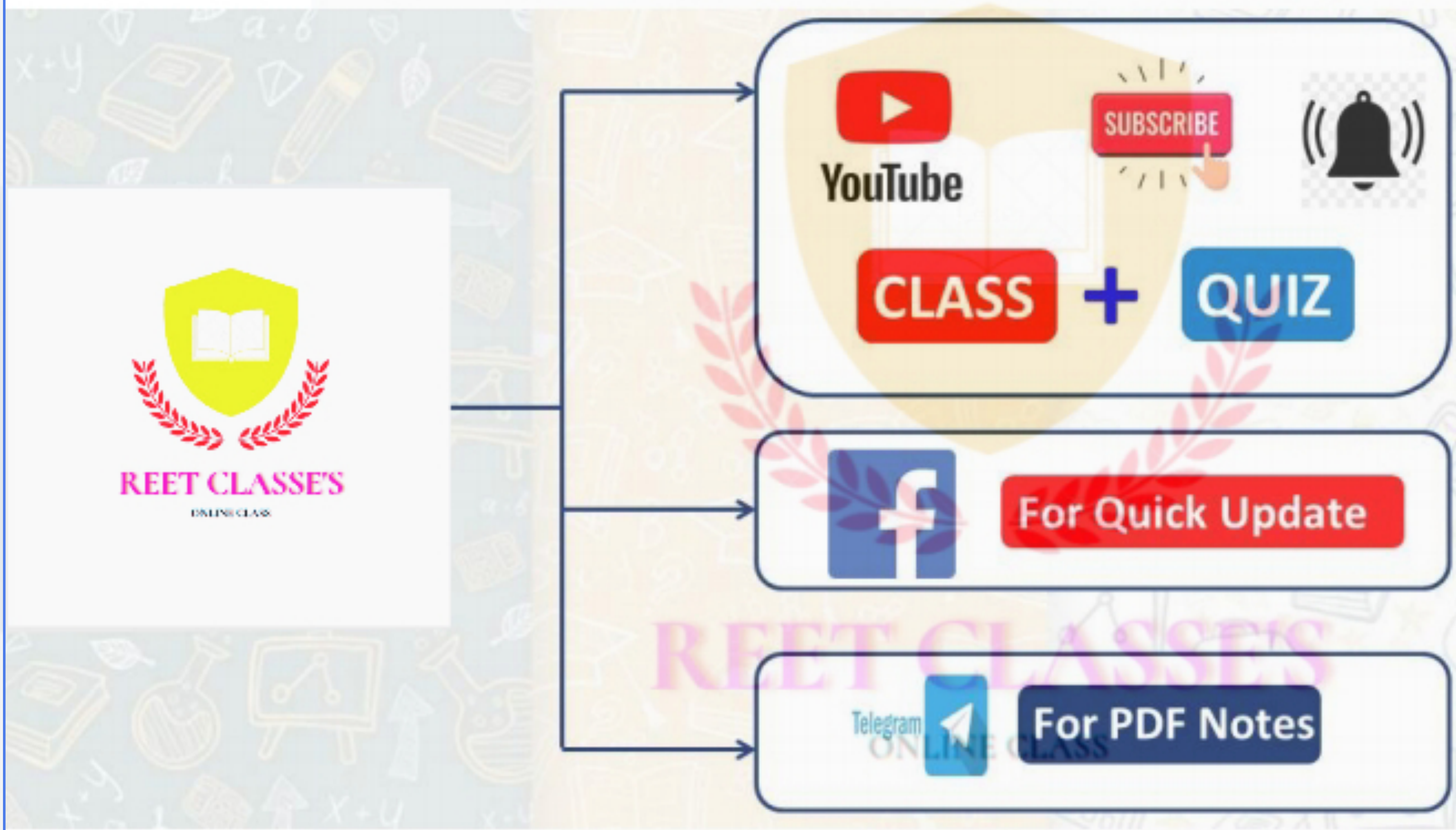
REET CLASSE'S
ONLINE CLASS
YouTube
SUBSCRIBE
CLASS
+
QUIZ
For Quick Update
Telegram
For PDF Notes

बौद्ध धर्म के अन्तर्गत त्रिरत्न - प्रज्ञा, शील, समाधि
अन्य त्रिरत्न - बुद्ध, संघ, धम्म

- महात्मा बुद्ध ने क्षणिकवाद का सिद्धान्त दिया था।
- महात्मा बुद्ध ने वेदों के अपौरुषेयता का खण्डन किया गया था

प्रिय शिष्य-
शासक - बिम्बिसार, प्रसेनजीत, अजातशत्रु, उदयन (कौशाम्बी) ↑ शासन काल मे बुद्ध कौशाम्बी अ
राजकीय महिलाएं - क्षेमा (बिम्बिसार की पत्नी), मल्लिका (प्रसेनजीत की
निजी परिचारक - आनन्द
राज्य कर्ता - सुनीति, नरसकार
चिकित्सक - जीवक
गणिका - आम्रपाली
कर्मकार - चुंद (सुनार / लोहार)
डाकू - अंगुलिमाल

जन्म	563 ई० पू०
शादी	16 वर्ष की अवस्था मे
गृहत्याग	29 वर्ष की अवस्था मे
ज्ञान प्राप्ति	35 वर्ष की अवस्था
मृत्यु	483 ई० पू० 80 वर्ष

महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़ी घटनाएं एवं प्रतीक :-

माता के गर्भ मे आना	हाथी
जन्म	कमल का फूल
यौवन	सांड़
गृह त्याग	घोड़ा
ज्ञान प्राप्ति	पीपल का वृक्ष
निर्वाण (मोक्ष)	पद चिन्ह
प्रथम उपदेश	चक्र → धर्मचक्र परिवर्तन
महापरिनिर्वाण	स्तूप

महापरिनिर्वाण
↓
तृष्णा रूपी अग्नि का शा

महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े आठ महत्वपूर्ण स्थल-

1- लुम्बिनी - जन्म (शाल वृक्ष के नीचे) → नेपाल की तराई मे उ० प्र० के बस्ती जिले के पिपरहवा
2- सारनाथ - प्रथम उपदेश (ऋषि पत्तन के मृग दाव उद्यान मे)
3- राजगीर - प्रथम बौद्ध संगीति
4- वैशाली - द्वितीय बौद्ध संगीति, आम्रपाली का आवास
5- कुशीनगर - देवरिया जिले का कसिया गांव (मृत्यु स्थान) - महापरिनिर्वाण मल्ल राज्य
6- बोध गया - ज्ञान की प्राप्ति
7- श्रावस्ती - सर्वाधिक - अनुयायी, वर्षावास, उपदेश
8- संकास/संकिसा - स्वर्ग से महात्मा बुद्ध यहीं अवतरित हुए थे।

महात्मा बुद्ध के जीवन मे पहली बार -

पहला गुरु - आलार कलाम (वैशाली)
शिष्य - तपस्सु और भल्लिक (शूद्र बंजारे)
उपदेश - सारनाथ मे पंचवर्गीय ब्राह्मण भिक्षु को
पहली भिक्षुणी - महाप्रजापति गौतमी, इसके बाद नन्दा यशोधरा
⇒ महात्मा बुद्ध द्वारा शिक्षित किया जाने वाला अन्तिम व्यक्ति - सुभद्र

बौद्ध संगीतियाँ-

बौद्ध संगीति	आयोजन वर्ष	अध्यक्ष	समकालीन शासक	आयोजन स्थल	परिणाम
प्रथम	483 ई०पू०	महाकस्सप	अजातशत्रु (हर्यकवंशीय)	राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)	दो पिटकों का संकलन- 1- सुत्त पिटक 2- विनय पिटक
द्वितीय	383 ई०पू०	साबकमीर या सर्वकामी	कालाशोक	वैशाली	प्रथम विभाजन 1- स्थविरवाद 2- महासांघिक
तृतीय	253 ई०पू०	मोगलिपुत्त तिस्स	अशोक	पाटलिपुत्र	तृतीय पिटक अभिधम्म पिटक का संकलन
चतुर्थ	प्रथम शताब्दी	वसुमित्र	कनिष्क	कुंडल वन कश्मीर	विभाजन 1- हीन यान 2- महायान

⇒ हीन यान शाखा की पढ़ाई- वल्लभी विश्वविद्यालय (गुजरात)
⇒ महायान शाखा की पढ़ाई - नालंदा विश्व विद्यालय (स्थापना-कुमार गुप्त)
↓
पुस्तकालय - धर्मगंज → रत्न सागर, रत्न दधि, रत्नरंजक

नालंदा विवि का विनाश- कुतुबुद्दीन बख्तियार खिलजी

शून्य वाद के प्रवर्तक - (आइन्सटीन आफ इंडिया) → नागार्जुन
↓
पुस्तक → प्रज्ञापारमिता सूत्र, माध्यमिककारिका

विज्ञान वाद के प्रवर्तक - मैत्रेयनाथ

वज्रयान - सातवीं शताब्दी ई० मे अस्तित्व मे आयी।
विशेष रूप से पढ़ाई - विक्रमशिला विश्वविद्यालय
स्थापना - धर्मपाल

⇒ पाल वंश ऐसा अन्तिम वंश था जिसने बौद्ध धर्म को संरक्षण प्रदान किया।

विनय पिटक- जीवन के नियम

जैन धर्म - प्रा० जैन धर्म का इतिहास - भगवती सूत्र, कल्पसूत्र

जैन 'जिन' शब्द से निकला है जिसका तात्पर्य होता है - विजेता

⇒ महावीर के पहले जैन धर्म को - निर्ग्रन्थ या निगण्ठ
↳ तात्पर्य - जिसने समस्त सांसारिक बंधनों से अपना नाता तोड़ दिया हो।

⇒ बौद्ध साहित्यों में महावीर को, 'निगण्ठनाथ पुत्र' या 'निर्ग्रन्थिशाही पुत्र' कहकर पुकारा गया है।

⇒ जैन साहित्य को 'आगम' कहा जाता है)

तीर्थंकर - कुल - २४

प्रथम - ऋषभ देव (आदिनाथ) ⇒ इनका मन्दिर माउन्ट आबू के समीप दिलवाड़ा में भीम प्रथम के मंत्री विमल द्वारा बनवाया गया।

(मन्दिर को आदिशाही का मन्दिर या विमलशाही का मन्दिर कहा जाता है)

ऋषभ देव की मृत्यु - अष्टपद कैलाश पर्वत

ऋषभ देव का प्रतीक चिन्ह - **वृषभ**

१९वें तीर्थंकर - **मल्लिनाथ** - प्रतीक चिन्ह - कलश
↳ (स्त्री / पुरुष इस बात पर सन्देह है)
श्वेतांबर दिगंबर

२२वें तीर्थंकर - **अरिष्टनेमि** या नेमिनाथ (महाभारत काल के थे) ⇒ प्रतीक - हाथी

जैन साहित्य उत्तराध्ययन सूत्र ⇒ इनको कृष्ण के समकालीन / सम्बंधी मानाहै)

पार्श्वनाथ - २३वें और **प्रथम ऐतिहासिक** तीर्थंकर

जन्म - काशी नरेश अश्व सेन के यहाँ

माता - रानीवामा
पत्नी - प्रभावती } → प्रथम अनुयायी

⇒ भिक्षुओं को श्वेत वस्त्र पहनने का आदेश दिया

प्रतीक चिन्ह - **सर्प**

⇒ पारसनाथ (बिहार) के **'सम्मेद शिखर'** पर ज्ञान की प्राप्ति

⇒ पंच महाव्रतों में चार का प्रतिपादन इनके द्वारा ही किया गया

१ - अहिंसा   २ - अमृषा / सत्य   ३ - अचौर्य / अस्तेय   ४ - अपरिग्रह

∴ पाँचवा महाव्रत **'ब्रह्मचर्य'** महावीर स्वामी द्वारा जोड़ा गया।

महावीर - २४वें व **अन्तिम** तीर्थंकर, जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक

जन्म - ५४० ई०पू० वैशाली के कुण्डग्राम में

पिता - सिद्धार्थ (वज्जि महाजनपद के ज्ञातृक गण के मुखिया)

माता - त्रिशला (वैशाली के लिच्छवी नरेश चेटक की बहन)

पत्नी - यशोदा,

पुत्री - अनोज्जा प्रियदर्शना

दामाद - जमालि → महावीर के प्रथम शिष्य

⇒ बड़े भाई नन्दिवर्धन से आज्ञा लेकर 30 वर्ष की आयु मे गृहत्याग किया
⇒ 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद अंग देश मे ऋजुपालिका नदी या ऋजुबालिका नदी के किनारे शाल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति। (आचारांगसूत्र)
⇒ ज्ञान प्राप्ति के बाद 'जिन' या विजेता कहलाए।
⇒ प्रथम उपदेश - राजगृह के राजकुमार की (मेघकुमार) को - वितुलाचल पर्वत पर
⇒ प्रचार प्रसार की भाषा - अर्धमागधी / प्राकृत

> NOTE - गौतम बुद्ध के धर्म प्रचार की भाषा - पालि थी।

गण एवं गणधर - विचारों का प्रचार-प्रसार करने के लिए महावीर ने 11 गणों की नियुक्ति की।

गणधर → गण का प्रधान

⇒ दो (इन्द्रभूति, आचार्य सुधर्मन) को छोड़कर सबकी मृत्यु महावीर के जीवन काल मे ही हो गयी।

महावीर की मृत्यु - 72 वर्ष की अवस्था मे - पावा मे (468 ई०पू०) मल्ल राजा (शस्तिपाल के दरबार मे)

श्रवणबेलगोला की बाहुबली मूर्ति - 70 फिट ऊँची
मैसूर के गंग वंश के राजा राजमल के मंत्री चामुण्डराय द्वारा
इसे 'गोमतेश्वर की मूर्ति' कहा जाता है।

जैन संगीति :-

संगीति	आयोजनस्थल	आयोजनवर्ष	अध्यक्ष	शासक	परिणाम
प्रथम	पाटलिपुत्र (कुसुमपुर)	300 ई०पू० के आस पास	स्थूलभद्र	चन्द्रगुप्त मौर्य	श्वेतांबर और दिगंबर मे विभाजित
द्वितीय	वल्लभी	512 ई०	देवार्धिगण क्षमाश्रमण	ध्रुवसेन प्रथम	अनेक उपांग साहित्यों की रचना

⇒ श्वेतांबर का नेतृत्व - स्थूल भद्र → (तेरापंथी, थेरापंथी, तारणपंथी), दिगंबर का नेतृत्व - भद्र बाहु → (मुनेरा, बड़िया थेरापंथी) ↔ अपरिग्रह

⇒ जैन धर्म की सबसे प्राचीन शिक्षा - चौदह पूर्व मानी जाती है जिसे स्थूल भद्र ने भद्र बाहु से सीखा था।

⇒ जैन धर्म के पांच ज्ञान - मति, श्रुति, अवधि, मनः पर्याय

जैन धर्म के सिद्धान्त - स्यादवाद / अनेकान्तवाद

वैष्णव धर्म एवं शैव धर्म-

विष्णु का सर्वप्रथम उल्लेख- ऋग्वेद

⇒ वैष्णव धर्म को "भागवद् धर्म" या "पांचरात्र धर्म" भी कहा जाता है।

⇒ भागवद् मे कृष्ण की पूजा की जाती है।

↳ प्राचीन उल्लेख- छांदोग्य उपनिषद

इसके इसमे कृष्ण को देवकी का पुत्र एवं अंगिरस का शिष्य बताया गया है।

⇒ कृष्ण की भगवान के रूप मे पूजे जाने की जानकारी- "पाणिनी कृत अष्टाध्यायी से"

इस ग्रन्थ मे वासुदेव के पूजकों को वासुदेव पूजक कहकर पुकारा गया है।

⇒ भागवद् धर्म की पहली जानकारी- हेलियोडोरस का बेसनगर का गरुड़ स्तम्भ अभिलेख

भक्ति के 9 रूपों की चर्चा

⇒ हेलियोडोरस तक्षशिला के "यूक्रेटाइडीज" वंशीय यूनानी शासक "एण्टीयाल्कीड्स" का दूत बनकर विदिशा शासक भागभद्र के दरबार मे आया था।

⇒ तोषा नामके महिला ने मथुरा के पास मोरा नामक गांव के एक कुए की दीवार पर अभिलेख खुदवाया था जिसमे "पंचवृष्णि वीरों" का उल्लेख है।

पंचवृष्णि वीर- संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, साम्ब, वासुदेव

⇒ भागवद् धर्म मे चक्रव्यूह की अवधारणा विकसित हुई।

गुप्त काल मे वैष्णव धर्म- चरमोत्कर्ष पर

गुप्त वंशीय अधिकांश शासक - भागवत् धर्मानुयायी थे।

उपाधि - परम भागवत

गुप्त कालीन शासकों का राजकीय चिन्ह - गरुड़

⇒ गुप्त काल मे विष्णु के अवतारवाद की अवधारणा काफी प्रसिद्ध हुई

⇒ विष्णु के 10 अवतार माने जाते है। ऋग्वेद

⇒ गुप्त काल मे सर्वाधिक लोकप्रिय - वराह

⇒ बुद्ध को 9 वॉं अवतार माना जाता है।

⇒ 10वॉं कल्कि के रूप मे होना बाकी है।

कल्कि का प्रतीक चिन्ह - मैत्रेय

वराह → सागर से पृथ्वी का उद्धार करते हुए

मत्स्य	परशुराम
कूर्म	राम
वराह	कृष्ण
नरसिंह	बुद्ध
वामन	कल्कि

विष्णु के 10 अवतार

अलवार संत :- वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।

⇒ दक्षिण भारत मे पल्लवो के शासन काल मे
⇒ अलवार संत पंडित या आचार्य न होकर 'भक्त' होते थे
⇒ अलवार संतो की संख्या -12
प्रसिद्ध- अंडाल, नाम्मालवर, कुलशेखर
अंडाल ↓ महिला (दक्षिण भारत की मीरा)
कुलशेखर ↓ केरल के शासक

शैव धर्म- (शिव से संबंधित)

इस धर्म के उदय होने की जानकारी - चौथी शताब्दी मे ई० पू० मे मेगस्थनीज के ग्रंथ 'इंडिका' से
→ इस ग्रन्थ मे डायनोसिस (शिव), हेराक्लीज (कृष्ण) नामक दो भारतीय देवताओं का वर्णन मिलता है।

शैव धर्म के रूप- पाणिनी के अष्टाध्यायी के अनुसार - 4
1- शैव 2- पाशुपत 3- कापालिक 4- कालामुख

→ सबसे प्रसिद्ध - पाशुपत सम्प्रदाय → (सबसे प्राचीन भी)
↓ प्रवर्तक लकुलीश थे।

लकुलीश को शिव का अट्ठाइसवाँ अवतार माना जाता है।
कापालिकों इष्ट देव - भैरव

नयनार संत :- पल्लवो के ही शासन काल मे शैव धर्म के अन्तर्गत

कुल - 63
प्रसिद्ध- अप्पार, सुंदरमूर्ति, मणिक्कवाचगर तथा संबंदर
अप्पार ↓ पल्लव नरेश महेन्द्र वर्मन के समकालीन
मणिक्कवाचगर ↳ उपाधि- ईश्वर मित्र
मणिक्कवाचगर ने "तिरुवाशागम्" नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की।

सूर्य मन्दिर- तेरहवी शताब्दी मे - ~~उडीसा के सूर्य का कोणार्क~~

उडीसा के कोणार्क मन्दिर → गंगवंशीय शासक नरसिंह के शासन काल मे
⇒ वर्षा के कारण काला हो जाने से इसे "ब्लैक पैगोडा" कहा जाता है।

कश्मीर मे - श्रीनगर मे - कार्कोट वंशीय शासक ललितादित्य मुक्तापीड ने मार्तंड के सूर्य मन्दिर का निर्माण करवाया।

मौर्यकाल -

इतिहास की जानकारी के स्रोत -

मेगस्थनीज कृत इंडिका - मेगस्थनीज- सेल्यूकस निकेटर का दूत

→ भारत मे कभी अकाल नही पड़ता।
→ भारतीय लेखन कला से अपरिचित है।
→ भारतीय दो महत्वपूर्ण देवता हेराक्लिज (कृष्ण) और डायोनीसियस (शिव) की पूजा करते हैं।
→ मार्ग निर्माण के विशिष्ट अधिकारियों को "एग्रोनोमोई" कहा है
→ नगर प्रशासन के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को 'एस्टिनोमोई' कहा है
का विस्तृत वर्णन

कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र - कौटिल्य / चाणक्य का मूल नाम - 'विष्णुगुप्त' (भारत का मैकियावेली)

→ इससे "मौर्यकालीन प्रशासन" की पूर्ण जानकारी मिलती है।
→ इसमे राज्य के सप्तांग सम्बन्धी विचारधारा का उल्लेख हुआ है। (स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड तथा मित्र)
→ शासक के 'प्रबुद्ध निरंकुशतावाद' की बात की है।
→ इस पुस्तक मे गुप्तचर प्रथा पर काफी बल दिया गया है।

विशाखदत्त कृत मुद्रा राक्षस :-

→ इस बात की जानकारी मिलती है कि किस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य के साथ मिलकर धनानंद की हत्या की।
→ संस्कृत भाषा मे रचित प्रथम जासूसी ग्रन्थ

पुराण :-

→ पुराणों का अंतिम संकलन गुप्त मे हुआ।
→ मौर्य वंश के ऐतिहासिक वंशावलियों की जानकारी मिलती है कि मौर्य वंशीय शासको ने 137 वर्षों तक शासन किया।
→ पुराण मे विष्णु पुराण इस काल की जानकारी देते हैं।

दीपवंश और महावंश :-

→ इस "श्रीलंकाई या सिंहली ग्रन्थ" से इस बात की जानकारी मिलती है कि अशोक ने राजगद्दी प्राप्त करने से पूर्व अपने 99 भाइयों की हत्या की थी।

पुरातात्विक साक्ष्य:-

उत्तरी काली पॉलिशदार मृदभांड - सर्वप्रथम प्रयोग - बौद्ध युग में
बड़े पैमाने पर - मौर्य काल में

आहत मुद्रा - भारत की ज्ञात प्राचीन मुद्रा → (पंचमार्क्ड सिक्के)
सर्वप्रथम प्रयोग - बौद्ध युग (5वीं शताब्दी ई॰पू॰)
बड़े पैमाने पर - मौर्य काल में
मौर्य कालीन चाँदी की आहत मुद्रा - "पण" या कार्षापण
तांबे की आहत मुद्रा - "माषक" या काकणी

अभिलेख:-

चन्द्रगुप्त मौर्य के अभिलेख -

- "सोहगौरा अभिलेख" (गोरखपुर जिला, उ॰प्र॰)
- "महास्थान अभिलेख" (बोगरा जिला, बंग्लादेश)

} अकाल की परिस्थितियों में मौर्य प्रशासन के कार्य के बारे में जानकारी

रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख -

(शक वंश का सबसे महान शासक)

→ जूनागढ़ / गिरनार (काठियावाड़, गुजरात)
→ "संस्कृत भाषा" में जारी किया जाने वाला प्रथम अभिलेख

→ इस अभिलेख से सुदर्शन झील की जानकारी मिलती है।
निर्माण - चन्द्र गुप्त मौर्य के अधिकारी "पुष्य गुप्त वैश्य"

→ सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण -
अशोक - यवनराज तुषास्फ *
रुद्रदामन - सुविशाख *
स्कन्दगुप्त - चक्र पालित *

अशोक के अभिलेख:-

→ सर्वप्रथम फिरोजशाह तुगलक ने मेरठ (उ॰प्र॰) और टोपरा (अम्बाला हरि॰) से प्राप्त किया।

→ सर्वप्रथम अशोक के अभिलेख को पढ़ने वाला - "जेम्स प्रिंसेप"
सर्वप्रथम अशोक के अभिलेख को पढ़ा था। इसने "ब्राह्मी लिपि" में खुदे दिल्ली टोपरा के अभिलेख को पढ़ा था।

→ अशोक के अभिलेख चार लिपियों में - ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक, अरामेईक

* ब्राह्मी लिपि → बाएं से दाएं } लिखी जाती है।
अनुराधापुर — खरोष्ठी लिपि → दाएं से बाएं

→ खरोष्ठी लिपि में - मानसेहरा (हजारा जिला पाकिस्तान)
शाहबाजगढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान)

→ ग्रीक तथा अरामेइक में - कंधार के लघु शिला लेख

→ गोमुत्रिका या बास्त्रोफेदन शैली में - येरागुडी (कुर्नूल (आन्ध्र)

→ अपने शासन काल के,

8 वें वर्ष - कलिंग का युद्ध (261 ई॰पू॰)
13 वें वर्ष - धम्म महामात्र की नियुक्ति (256 ई॰पू॰)
14 वें वर्ष - कनक मुनि (नेपाल) के स्तूप को दोगुना करने का आदेश
20 वें वर्ष - लुम्मिनदेई (लुम्बिनी) की यात्रा
यहाँ पर धार्मिक कर को समाप्त कर दिया

बृहद शिलालेख एवं उनके विषय - प्रयुक्त भाषा - प्राकृत

प्रथम - जीव हिंसा निषेध (तीन प्राणियों को छोड़कर)
दो मोर एक हिरन } सदैव दिखता नहीं
दो पक्षी एक पशु }
बाद में ये तीनों नहीं मारे जाएंगे।

द्वितीय - पड़ोसी राज्यों की सूची

तृतीय - प्रादेशिक, रज्जुक द्वारा पाँच पाँच वर्ष पर क्षेत्र दौरा
उज्जैन और तक्षशिला तीन-तीन वर्ष में

पाचवें - 13 वें वर्ष धम्म महामात्र की नियुक्ति

छठे - राज्य की गतिविधियों

तेरहवें - कलिंग युद्ध, आटविक जातियों को कड़ी चेतावनी
अपने समकालीन पाँच विदेशी राज्यों की जानकारी

12 वाँ ↓ (धार्मिक सहिष्णुता के प्रति)

तुरमय - मिस्र के शासक टालमी द्वितीय फिलाडेल्फस
अंतेकिन - मेसाडोनिया का शासक एंटिगोनस गोनाटस
मगस - सीरिन का मगस
अलिकसुन्दर - एपिरस का अलेक्जेंडर
अंतियोक - सीरिया का शासक एंटियोकस द्वितीय थियोस

कुछ महत्वपूर्ण शिलालेख -

मास्की (कर्नाटक के रायचूर जिले में) } → देवनाम प्रियम
गुर्जरा (मध्य प्रदेश के दतिया जिले में) } → प्रियदर्शी

(इन दोनों अभिलेख से "नाम की" जानकारी)

कंधार :- द्विभाषी (ग्रीक + अरामेइक)
पशुवध के खिलाफ

भाब्रु- म०प्र० व राजस्थान की सीमा पर स्थित (जयपुर मे)
→ मगध के शासक होने की स्पष्ट जानकारी
→ नाम- प्रियदर्शी राजा मागधे
इसमे बौद्ध धर्म का निचोड़ है।

स्तम्भ शिलालेख:- सभी प्राकृत भाषा और ब्राह्मी लिपि मे

→ रुम्मिनदेई तथा निगलियासागर से प्राप्त स्तंभाभिलेख को स्मारकीय स्तम्भाभिलेख कहा जाता है।

→ साची, सारनाथ तथा कौशाम्बी से प्राप्त अभिलेख को - संघभेद अभिलेख

सारनाथ का सिंह अभिलेख:-

→ मौर्य मूर्तियो मे सबसे विख्यात और प्रशंसित
→ इसकी चौकी पर चार पहिए या धर्मचक्र के प्रतीक है उनके बीच मे हाथी, बैल, अश्व और सिंह है।
→ चौकी की पीठ पर चार सजीव सिंह चारो दिशा मे मुंह किए हुए
→ इन स्तम्भों मे सिंहो के ऊपर एक बौद्ध चिन्ह "धर्मचक्र" बना हुआ है जिसमे बत्तीस तीलिया लगी हैं।

अशोक एवं दशरथ के गुहाभिलेख:-

अशोक - बराबर की पहाड़ी पर → चार गुफा – कर्णचौपार
सुदामा
विश्वझोपड़ी
लोमिश ऋषि

दशरथ- नागार्जुन की पहाड़ी पर
तीन – 1- गोपी
2- वहियक
3- वडथिका

→ दोनो पहाड़ी बोध गया मे आमने-सामने है।

→ दोनो ने अपनी गुफा "आजीवको" को भेंट मे प्रदान कर दी

आजीवक मत का संस्थापक - "मक्खलि गोशाल"
सिद्धान्त - नियतिवाद
"कर्म के सिद्धान्त की अवहेलना करते थे"।

कौशाम्बी –	घोषिताराम मठ
कुशीनगर -	रामा भर स्तूप
सारनाथ –	धमेख अभिलेख
श्रावस्ती –	सहेत - महेत

→ पत्थर पर प्राचीनतम शिलालेख - प्राकृत भाषा मे
→ ब्राह्मी लिपि का प्रथम उद्वाचन - पत्थर की पट्टियों पर

मौर्य कालीन शासक-

मौर्य कौन थे – तीन मत प्रतिपादित किए गए है-

प्रथम- स्पूनार महोदय - मौर्यों को पारसीक बताया है।

द्वितीय - ब्राह्मण साहित्य - शूद्र

तृतीय - बौद्ध एवं जैन साहित्य - क्षत्रिय

→ मुद्रा राक्षस मे भी मौर्यों को (वृषल) निम्न कुल का बताया गया है।

चन्द्र गुप्त मौर्य:– (322-298 ई०पू०)

यूनानी लेखक → जस्टिन ने "सैण्ड्रोकोट्टस" } कहा है।
प्लूटार्क ने - "एण्ड्रोकोट्टस" }

→ सर्वप्रथम "विलियम जोन्स" ने इन नामो का समीकरण चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ स्थापित किया है।

→ चन्द्रगुप्त मौर्य को "मुक्तिदाता" कहा गया है।

→ इसके शासन काल मे 305 ई० पू० मे सेल्यूकस निकेटर का भारत पर आक्रम
दोनों के बीच हुई संधि का परिणाम -

1- मेगस्थनीज नामक दूत चन्द्रगुप्त के दरबार मे भेजा

2- अपनी पुत्री हेलिना की शादी चन्द्र गुप्त मौर्य से (प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय वि

3- सेल्युकस को 500 हाथी प्रदान किए गए।

चन्द्रगुप्त मौर्य का धर्म- दिगम्बर जैन का अनुयायी राजधानी-पाटलि

→ प्रथम जैन संगीति का पाटलिपुत्र मे आयोजन

→ मृत्यु- कर्नाटक के "श्रवणबेलगोला" (हासन जिला कर्नाटक) मे स्थित चन्द्र गिरि पर्वत पर संल्लेखना की पद्धति से

बिन्दुसार (298-272 ई०पू०) -

यूनानी लेखक स्ट्रैबो ने - "अमित्रोचेट्स" कहा है

→ फ्लीट ने इसका सम्बन्ध "अमित्रघात" से स्थापित किया है।

बिन्दुसार की माता - दुर्धरा

पत्नी - धम्मा / सुभद्रांगी

→ शासन काल मे सीरियाई शासक एंटियोकस प्रथम का दूत बनकर "डायमेकस" भारत आया था।

↳ तीन चीजे मांगी थी
- सूखी अंजीर
- शराब
- दार्शनिक

→ मिश्र के शासक का दूत - डायनोसियस

→ "आजीवक मत" का अनुयायी था।

→ मुख्य परामर्शदाता - पिंगलवत्सा जीव

सम्राट अशोक :- (272-232 ई०पू०) → उपाधि :"देवानाम प्रिय प्रियदर्शी"

माता – सुभद्रांगी (चम्पा राजवंश की ब्राह्मण कन्या)

पत्नी	संतान
असंधिमित्रा	निःसंतान
कारुवाकी	तीवर
पद्मावती	कुणाल
देवी (विदिशा के एक व्यापारी की पुत्री)	महेन्द्र और संघमित्रा

(सहिष्णुता, उदारता और करुणा के आधार पर राजधर्म की स्थापना)

⇒ अशोक के दो संतान जालौक और चारुमति के संबंध मे कोई स्पष्ट जानकारी नही है

कलिंग का युद्ध और उसका प्रभाव – (261 ई०पू०) शासनकाल के 8वें वर्ष मे

→ कलिंग के शासक खारवेल के हाथीगुफा अभिलेख (उड़ीसा) के अनुसार कलिंग युद्ध के समय वहाँ का शासक नन्द राज था।

→ कल्हण के राजतरंगिणी के अनुसार बौद्ध धर्म को अपनाने के पूर्व शैव धर्म का उपासक था।

→ चचेरे भाई सुमन के पुत्र न्यग्रोध के प्रवचन को सुनकर बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुआ।

→ बौद्ध धर्म मे दीक्षित करने का श्रेय "उपगुप्त को"

बौद्ध धर्म के विकास मे योगदान- पाटलिपुत्र मे तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन

बौद्धधर्म के प्रचार-प्रसार मे विभिन्न प्रचारकों को भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे भेजा -

श्रीलंका	महेन्द्र व संघमित्रा
नेपाल	स्वयं चारुमति के साथ
वनवासी	रक्षित
यवन देश	महारक्षित
महाराष्ट्र	महाधर्मरक्षित
स्वर्ण भूमि	सोन एवं उत्तरा

बौद्ध धर्म के प्रचार के समय श्रीलंका का शासक - तिस्स (प्रियदर्शी)

धम्म शब्द "राहुलोवादसुत्त से"

अशोक के द्वारा बसाए गए नगर -

→ नेपाल मे- ललितपाटन

→ कश्मीर मे - श्री नगर (वितस्ता/झेलम नदी के किनारे)

→ नेपाल मे पुत्री चारुमति द्वारा अपने पति देवपाल के नाम पर देवपाटन नामक एक नए शहर की स्थापना

अशोक के उत्तराधिकारी :-

कुछ ग्रन्थों के अनुसार - कुणाल

विष्णु पुराण के अनुसार - सुयश

⇒ कुणाल अन्धा था अतएव उसके स्थान पर सम्प्रति ने शासन किया

कुणाल के बाद - दशरथ (उपाधि - प्रियदर्शी)

⇒ मौर्य वंश का अन्तिम शासक "बृहद्रथ" था जिसकी हत्या 185 ई०पू० में ब्राह्मण मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने कर दी और एक नए वंश शुंग वंश की स्थापना की।

मौर्य कालीन सांस्कृतिक गतिविधियाँ -

प्रशासन - जानकारी - अर्थशास्त्र और इण्डिका से

→ अर्थशास्त्र में शासन के जिस स्वरूप की बात की गई है वह वंशानुगत राजतंत्रीय है।

→ कौटिल्य ने लिखा है कि विशाल साम्राज्य के शासन के लिए परामर्शदात्री संस्था का होना अनिवार्य है।

→ कौटिल्य - शासन का भार मुख्यत: एक विशाल वर्ग पर था।

कुछ महत्वपूर्ण अधिकारी :-

✓ समाहर्ता - भू-राजस्व वसूलने वाला

सन्निधाता - कोषाध्यक्ष

प्रशास्ता - राजकीय आदेशों को लिपिबद्ध करने वाला

अंतर्वंशिक - राजा के अंगरक्षक दल का प्रधान

दौवारिक - राजमहल का प्रधान अधिकारी

अन्तपाल - सीमावर्ती दुर्गों का प्रधान अधिकारी

दुर्गपाल - आंतरिक दुर्गों का प्रधान अधिकारी

(यूनानी इन अध्यक्षों को मजिस्ट्रेट कहते थे) → कुछ प्रमुख

✓ सीताध्यक्ष - राजकीय कृषि भूमि का प्रधान अधिकारी

लक्षणाध्यक्ष - टकसाल विभाग का प्रधान

विवीताध्यक्ष - चरागाह का प्रधान अधिकारी

पौतवाध्यक्ष - माप तौल से सम्बन्धित

आकराध्यक्ष - खान का अध्यक्ष

→ सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई - प्रान्त → संख्या - 5 थी।

प्रान्त	राजधानी
उत्तरापथ →	तक्षशिला
दक्षिणापथ →	सुवर्णगिरि
अवन्ति →	उज्जयिनी
मध्य प्रदेश / प्राच्य →	~~कलिंग~~ पाटलिपुत्र
कलिंग →	तोसली

→ प्रान्त, जिलों में विभक्त थे जिसे "आहार / विषय" कहा जाता था।
जिले का शासक- स्थानिक

→ मौर्यकालीन शासकों की न्याय व्यवस्था - दो तरह के न्यायालय

1- कंटकशोधक (फौजदारी)
तीन अमात्य
तीन प्रदेष्टा

2- धर्मस्थीय (दीवानी)
तीन अमात्य
तीन धर्मस्थ

→ नगर न्यायधीश को व्यवहारिक महामात्र तथा जनपद न्यायधीश को "रज्जुक" कहा जाता था।

→ दो प्रकार के गुप्तचर होते थे -
1- संस्था - एक ही स्थान पर टिककर गुप्तचरी करते थे
2- संचार - भ्रमण शील गुप्त चर

सामाजिक जीवन :-

→ वर्ण और वर्णाश्रम व्यवस्था पूर्णतः विकसित हो चुकी थी।
→ कौटिल्य के अनुसार वर्ण व्यवस्था ही सामाजिक संगठन का आधार है।
→ ब्राह्मणों को राज्य के तरफ से कर मुक्त भूमि दान में दी जाती थी। जिसे ब्रह्मदेय कहा जाता है।

→ कौटिल्य ने 15 वर्णसंकर जातियों का उल्लेख किया है जो अनुलोम व प्रतिलोम विवाह के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई।
"अनुलोम विवाह"- उच्च वर्ण का पुरुष निम्न वर्ण की महिला
"प्रतिलोम विवाह"- निम्न वर्ण का पुरुष उच्च वर्ण की महिला

कुछ वर्णसंकर जातियाँ-

पिता	माता	वर्णसंकर जाति
ब्राह्मण	वैश्य	अम्बष्ठ
ब्राह्मण	शूद्र	निषाद, पौल्कस
क्षत्रिय	शूद्र	उग्र
शूद्र	ब्राह्मण	चाण्डाल (सबसे निकृष्ट)

→ मेगस्थनीज भारतीय समाज को "सात" भागों में बांटा है-
(दार्शनिक, किसान, अहीर, कारीगर, सैनिक, निरीक्षक, सभासद)

स्त्रियों की स्थिति :- विधवाओं के पुनर्विवाह होते थे
→ सती प्रथा का उल्लेख कहीं नहीं मिलता

✓ रूपाजीवा - स्वतन्त्र रूप से जीवन यापन करती थी
✓ वेश्यालरूपादासी - ग्राहकों के मनोरंजन का कार्य करती थी।

→ इस काल में स्त्रियों की स्थिति भी बहुत खराब नहीं थी

प्रवहण - एक प्रकार का सामाजिक समारोह जिसमें खान-पान की व्यवस्था

आर्थिक जीवन :- व्यापारियों के काफिले को "सार्थवाह" कहा जाता था

वार्ता → कृषि + पशुपालन + वाणिज्य
↓
(जीविका का साधन) → बिना वर्षा के खेती

→ अच्छी भूमि को "अदेवमातृक" कहा जाता है।

→ मेगस्थनीज ने किसानों को सामाजिक वर्गीकरण मे दूसरा स्थान दिया है

मौर्यकालीन आय के क्षेत्र :-

दुर्ग - विभिन्न नगरो से होने वाली विभिन्न आय

राष्ट्र - जनपदों से होने वाली आय

राजकीय भूमि से (सीता) | गैरराजकीय भूमि से (भाग)

उदक भाग - पानी की सुविधाओं के बदले वसूल किया जाता था

प्रणय कर - आपातकालीन कर

सेतु - फलों के उद्यान, औषधि से प्राप्त आय

ब्रज - पशुओं से होने वाली आय

→ चाणक्य के अनुसार भू-स्वामी को क्षेत्रक तथा काश्तकार को उपवास कहा जाता है।

→ कुछ अन्य कर -

परिहीणक - भूमि पर हानि के बदले लिया जाने वाला कर

पार्श्व - व्यापारियों से लिया जाने वाला कर

पिण्डकर - गांवों से वसूल किया जाता था

निष्क्राम्य - आयात व निर्यात कर

→ अनाज के रूप मे लिया जाने वाला कर - मेय

नगद प्राप्त होने वाली आय - हिरण्य

व्यापारिक मार्ग- सर्वाधिक प्रसिद्ध मार्ग- उत्तरापथ

प्रारम्भ - पुष्कलावती से ताम्रलिप्त बन्दरगाह तक

इसी मार्ग को ग्राड ट्रंक रोड कहा जाता है।

मौर्यकालीन मूर्तिकला :- → धौली के हाथी की तुलना मे सांची और सारनाथ के सिंहों की शैली आडम्बर पूर्ण है।

→ यक्ष- यक्षिणियों की मूर्तियां प्रसिद्ध है।

सबसे प्रसिद्ध चामर ग्राहणी की मूर्ति

मौर्योत्तर काल :-

→ शुंग वंश की स्थापना के साथ मौर्योत्तर काल का इतिहास प्रारम्भ हो जाता है।

→ इस काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना - विदेशियों का भारत पर आक्रमण

विदेशी आक्रमणों के क्रम - यूनानी, शक, पहलव, कुषाण

हिन्द यूनानी - (बैक्ट्रियाई ग्रीक)

→ सर्वप्रथम "डिमेट्रियस" का आक्रमण हुआ। इसने साकल (स्यालकोट) को अपनी राजधानी बनाई।

मिनान्डर या मिलिन्द - *(बौद्ध साहित्यों में राजा मिलिंद)

→ भारत आने के बाद "बौद्ध धर्म" स्वीकार किया। और प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान नागसेन के साथ प्रश्नोत्तर शैली में वाद-विवाद

→ इसका संकलन - पाली बौद्ध साहित्य - "मिलिंद पण्हो"

हेलियोडोरस :-

→ एक अन्य वंश "यूक्रेटाइडीज वंश" के शासकों का आक्रमण हुआ।
राजधानी - तक्षशिला

→ इसी यूक्रेटाइडीज वंश का शक्तिशाली शासक एंटियाल्किड्स था। इसी का दूत बनकर हेलियोडोरस भारत आया था।

→ हेलियोडोरस विदिशा के शुंगवंशीय राजा "भागभद्र" के दरबार में आया था

बेसनगर अभिलेख - भारत आने के बाद भागवत धर्म अपनाया और "बेसनगर का गरुड़ स्तम्भ अभिलेख" जारी किया।
(भागवत धर्म की जानकारी देने वाला प्रथम अभिलेख)

शक या सीथियन - (दूसरे विदेशी आक्रमणकारी)

रुद्रदामन - शकों का सबसे महान शासक

जूनागढ़ अभिलेख -
- संस्कृत भाषा में जारी पहला अभिलेख
- सुदर्शन झील की जानकारी
- स्वयंवर प्रथा की जानकारी देने वाला प्रथम अभिलेख

पहलव या पार्थियाई - (तीसरी बाह्य शक्ति)
राजधानी - तक्षशिला

गोण्डोफर्निस :- पहलवों का सबसे शक्तिशाली शासक

→ उपलब्धियों की जानकारी - "तख्ते बही अभिलेख" (पेशावर, पाकिस्तान) से
↓
गोण्डोफर्निस को - गुदुव्हर

→ सबसे महत्वपूर्ण घटना - प्रथम शताब्दी ई॰पू॰ में सन्त थामस के नेतृत्व में ईसाई मिशनरी का सर्वप्रथम दल भारत आया

कुषाण या कुई-शांग :- (अन्तिम विदेशी कारी आक्रमणकारी)

→ मध्य एशियाई 'यूची नामक' जाति से सम्बन्ध रखते थे।

शासक - कुजुल कडफिसस :- कुषाण वंश का संस्थापक
उपाधि - राजा वांग

→ कुजुल कडफिसस की केवल "ताँबे" की मुद्राएं मिलती है जिस पर यूनानी व खरोष्ठी लिपि में लेख उत्कीर्ण है।

→ यह संभवतः बौद्ध धर्मावलम्बी था।

विम कडफिसस :-

→ सर्वप्रथम कुषाणों ने भारत में अपने "राज्य की स्थापना" इसी के नेतृत्व में किया।

→ "सोने" व ताँबे की मुद्राएं चलायी, जिस पर शिव नन्दी और त्रिशूल अंकित है

→ शैव मतानुयायी था।

कनिष्क :- कुषाण वंश का सबसे महान शासक

→ चीन के साथ दो युद्ध किया। और मध्य एशिया से गुजरने वाले रेशम मार्ग पर (सिल्क रूट) पर अपना नियंत्रण स्थापित किया

→ दो राजधानी बनाई - पेशावर ✓ (पुरुषपुर) मथुरा ✓

→ बौद्ध धर्म को महान संरक्षण दिया। इसे दूसरा अशोक भी कहा जाता है

→ इसी चतुर्थ बौद्ध संगीति < हीनयान / महायान में बौद्ध धर्म विभाजित

→ महायान शाखा के अन्तर्गत ही महात्मा बुद्ध की मूर्तियां बनाई गई।

→ कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध का अंकन हुआ है।

संरक्षित विद्वान :- अश्वघोष, वसुमित्र, नागार्जुन, चरक, पार्श्व

→ पार्श्व के कहने पर कनिष्क ने चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया था।

→ अश्वघोष को "भारत का मिल्टन" कहा जाता है।
↓ रचना
→ बुद्धचरित
→ सौन्दरानंद
→ सारिपुत्र प्रकरण → "संस्कृत भाषा में लिखा जाने वाला प्रथम नाटक ग्रन्थ

→ "चरक" प्रसिद्ध चिकित्साशास्त्री थे जिन्होंने चरक संहिता की रचना की।

→ नागार्जुन - "भारत का आइन्सटाइन" - भारत में सापेक्षतावाद का सिद्धान्त दिया।
↓
रचना - 1- प्रज्ञापारमिता सूत्र
2- माध्यमिक कारिका

→ वसुमित्र ने "विभाषशास्त्र" नामक ग्रन्थ की रचना की।
↳ बौद्ध धर्म का विश्वकोष

शक संवत :- कनिष्क ने 78 ई० में नया संवत 'शक सम्वत' चलाया।

→ इसे "22 मार्च 1957 को" भारत में राष्ट्रीय सम्वत के रूप में स्वीकार किया गया

→ विक्रम संवत - "57 ई० पू०" से प्रारम्भ हुआ।

शुंग वंश :- संस्थापक- मौर्य सेनापति "पुष्यमित्र शुंग"

→ इसी के शासन काल में यूनानीयों का भारत पर आक्रमण। पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र की सेना ने हिन्द यूनानियों को पराजित किया।

→ पुष्य मित्र शुंग ने - दो अश्वमेध, एक राजसूय } यज्ञ करवाया।

पुरोहित - पतंजलि
↳ महाभाष्य (टीका) की रचना की है।

→ उल्लेखनीय है "वाकाटक नरेश प्रवरसेन प्रथम" ने चार अश्वमेध यज्ञ करवाए थे।

→ पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध साहित्यों में कट्टर बौद्ध विरोधी बताया गया है।

संस्थापक-सिमुक **आन्ध्र सातवाहन वंश :-** (दक्कन क्षेत्र मे)

→ महाराष्ट्र का सात प्रथम राजवंश। मौर्योत्तर काल मे इस वंश का सर्वाधिक लम्बा काल रहा।

सातकर्णी प्रथम:- राजधानी "प्रतिष्ठान या पैठान"

→ इसने "दो अश्वमेध" यज्ञ तथा एक राजसूय यज्ञ करवाया।
→ दक्षिण भारत मे सातवाहनो के प्रभुसत्ता की स्थापना की।
→ अपनी पत्नी "नायनिका" के नाम पर रजत सिक्के जारी किए।

हाल:- शान्तिप्रिय एवं विद्वान शासक

→ प्राकृत भाषा मे एक प्रसिद्ध पुस्तक "गाथासप्तशती" की रचना की।

गौतमीपुत्र सातकर्णी:- सातवाहन वंश का 'सबसे प्रसिद्ध' शासक

→ शास्त्रों का ज्ञाता था तथा ब्राह्मण धर्म का प्रकांड परिपोषक था।
→ वर्णव्यवस्था की पुनः स्थापना करने का प्रयास किया और वर्णसंकरता की रोका
→ उसे द्विज और अवर (हीन जातियो) कुटुंबो का वर्धन करने वाला कहा गया है।

सातवाहनो की राजकीय भाषा - प्राकृत
समाज - मातृसत्तात्मक

→ सातवाहनों ने "शीशे और पोटीन" के सिक्के चलाए।
→ इन्ही के शासन काल मे मूर्ति निर्माण की "अमरावती कला शैली" का विकास हुआ।
→ अमरावती के प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण भी इन्ही के काल मे
मुख्य विशेषता - सफेद संगमरमर से निर्मित है

→ भूमि अनुदान के प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य सातवाहन काल से ही सम्बंधित है।

खारवेल - कलिंग शासक :-

→ अशोक की मृत्यु के बाद कलिंग स्वतंत्र हो गया और वहाँ एक नए वंश का उदय हुआ जिसे "चेदि वंश" या "महामेघवाहन वंश" कहते है।

प्रसिद्ध शासक - खारवेल

हाथीगुफा अभिलेख :- खारवेल के द्वारा राज्य काल के 13वें वर्ष

→ भुवनेश्वर के समीप खंड उदयगिरि पर्वत पर हाथी गुफा के दीवार पर

→ मूलत: "ब्राह्मी लिपि" तथा "प्राकृत भाषा" मे

→ समुद्र गुप्त के प्रयाग प्रशस्ति से मिलता जुलता

→ खारवेल को 'शांति एवं समृद्धि का सम्राट' कहा जाता है।

→ जीवन के अंतिम समय जैन धर्म स्वीकार किया।

मौर्योत्तर कालीन कला :-

→ मौर्योत्तर काल मे जिस कला का विकास हुआ उसे दो भागों मे बाटा जा सकता है - 1- वास्तु कला
2- मूर्तिकला

वास्तुकला :- ⎡→ आवासीय संरचना के अवशेष
⎣→ धार्मिक इमारत

→ आवासीय संरचनाओं की संख्या काफी कम है क्योंकि यह काष्ठ निर्मित होती थी।

→ धार्मिक इमारतों के बारे मे ज्यादा जानकारी प्राप्त होती है -
- नागार्जुन कोण्ड का मन्दिर
- बेस नगर मन्दिर
- भैरन कोण्ड का गुहा मन्दिर

अन्य धार्मिक इमारतें :-

स्तूप - सर्वप्रथम चर्चा - ऋग्वेद मे → अग्नि से उठती हुई ज्वालाओं के लिए

→ स्तूप का निर्माण ईंटो को चिनकर किया जाता है।

→ बौद्ध साहित्य मे - अस्थावशेषों के ऊपर निर्मित समाधि

सांची का स्तूप :- अशोक ने निर्मित करवाया था

→ "सांची की पहाडी पर" कई अन्य चैत्य होने के कारण उसका अन्य नाम 'चैत्य गिरि' था।

→ एक अन्य प्राचीन नाम - काकनादबोट

स्तूप - 3
गौतम बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्र व मौदगल्यायन के अस्थि अवशेष रखे है।

भरहुत का स्तूप :- निर्माण शुंग काल मे 'सतना' मे

→ भरहुत की वेदिका की मूर्तिकला बौद्ध धर्म के हीनयान शाखा से सम्बन्धित

अमरावती का स्तूप :-

→ सातवाहन वंश के शासन काल मे गुण्टूर जिला (आन्ध्र प्रदेश) मे अत्यधिक प्रसिद्ध स्तूपों का निर्माण भट्टीप्रोलू, अमरावती और नागार्जुनि कोण्ड मे किया गया।

→ अमरावती का महास्तूप आन्ध्र प्रदेश के गुण्टूर जिले मे कृष्णा नदी के दाए तट पर स्थित था।

→ सबसे महत्वपूर्ण विशेषता -"संगमरमर का बना होना"

चैत्य :- बौद्ध संघ का पूजा गृह (बौद्ध धर्म का देवालय)

विहार :- भिक्षुओं का आराम गृह

मूर्तिकला :- मूर्ति निर्माण की तीन कला शैली का विकास हुआ
1- गांधार मूर्ति कला शैली
2- मथुरा कला शैली
3- अमरावती कला शैली

गांधार मूर्ति कला शैली :- उद्भव प्रथम शताब्दी मे 'हिन्द यूनानियों' द्वारा

→ वास्तविक विकास कुषाणों के संरक्षण मे हुआ

→ इस कला के नमूने प्राप्त हुए है - जलालाबाद, बिमरन, बेग्राम, तक्षशिला बामियान

→ इस कला मे मूर्तियों के निर्माण के लिए मुख्यत:"नीले-भूरे रंग के" परतदार चट्टानों का प्रयोग किया गया है। साथ ही काले स्लेटी पत्थर मिट्टी व चूने मसाले का प्रयोग हुआ है।

विशेषता :- इस कला शैली को 'इण्डो ग्रीक' या 'ग्रेको रोमन' या इण्डोहेलिनिक के नाम से भी पुकारा जाता है।

→ इस कला की विषयवस्तु जहाँ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है वही निर्माण की शैली यूनानी व रोमन थी।

→ इस कला की सबसे खास विशेषता - "मानव शरीर का यथार्थ चित्रण या निरूपण"

→ बुद्ध की मूँछ युक्त करना गंधार कला की विशेषता है।

→ बुद्ध के सिर के पीछे बना पुंज गांधार शैली की देन है।
→ नारी मूर्तियों का अभाव है।

मथुरा ~~कला~~ **मथुरा कला शैली :-**

→ धब्बेदार या चित्तीदार लाल बलुआ पत्थरों का उपयोग हुआ है
→ सबसे महत्वपूर्ण विशेषता सर्वतोमुखी होना है।
→ गांधार कला शैली मे बुद्ध मूर्तियां 'पद्मासन' अथवा 'कमलासन' पर है जबकि मथुरा कला शैली मे बुद्ध सिंहासनासीन हैं। तथा पैरो के समीप सिंह की आकृति है।
→ इस कला शैली की मूर्तियो मे मुख पर आभामंडल एवं प्रभामंडल है।
→ मथुरा कला शैली के अन्तर्गत जिस धर्म से सम्बन्धित मूर्ति का सर्वप्रथम निर्माण हुआ वह जैन धर्म था।

अमरावती कला शैली :- उद्भव - दूसरी शताब्दी
विकास - तीसरी शताब्दी

→ मुख्य रूप से इसे 'सातवाहनों' का संरक्षण प्राप्त हुआ।
→ इस कला का प्रसार क्षेत्र - आधुनिक महाराष्ट्र, नागार्जुन कोण्डा अमरावती
→ इन मूर्तियों के लिए मुख्यत: 'उजले संगमरमर' का प्रयोग हुआ है।
→ अमरावती के स्तूप के चार शेरों का मूर्तन विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
→ इस कला शैली के अन्तर्गत निर्मित मूर्तियां हाव भाव और शारीरिक सौन्दर्य की दृष्टि से अन्य समकालीन शैलियों से श्रेष्ठ हैं।

गुप्त काल- जानकारी के स्रोत :-

→ गुप्तों के जन्म और मूल निवास के बारे में कुछ कहना सम्भव नहीं है
गुप्त संभवतः "वैश्य वर्ण" से सम्बन्ध रखते थे।

साहित्यिक स्रोत :-

पुस्तक	लेखक
अमरकोश	अमरसिंह
सिंहासन बत्तीसी	बेताल भट्ट
सुश्रुत संहिता	सुश्रुत (गुप्तकालीन चिकित्सक)
चांद्र व्याकरण	चन्द्रगोमिन
पंचतन्त्र	विष्णु शर्मा
स्वप्नवासवदत्तम	भास
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
मृच्छकटिकम	शूद्रक

कालिदास :- उपनाम-"भारत का शेक्सपीयर"

→ चन्द्रगुप्त द्वितीय के नवरत्नों में एक। शैव मतावलम्बी व वेदान्त के अनुयायी
→ 634 ई० के "एहोल अभिलेख" (जैन कवि रविकीर्ति द्वारा रचित, चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय से सम्बन्धित) में कालिदास को कवि के रूप में उल्लिखित किया गया है।
→ कालिदास की कृतियाँ - रघुवंश महाकाव्यम, कुमार सम्भवम, मेघदूतम, ऋतु संहारम (चार काव्य), (उर्वशी पुरूरवा प्रणय कथा)
कुल-7 → मालविकाग्निमित्रम, विक्रमोर्वशीयम, अभिज्ञान शाकुन्तलम (तीन नाटक ग्रन्थ)
(अग्निमित्र मालविका प्रणय कथा)

सबसे प्रसिद्ध कृति - अभिज्ञानशाकुन्तलम → अंग्रेजी अनुवाद 1789 में "विलियम जोन्स" द्वारा

कामन्दक :-

→ चन्द्रगुप्त द्वितीय के लिए 'नीतिसार' की रचना की।
↓ चाणक्य के अर्थशास्त्र पर आधारित

विशाखदत्त :-

→ संस्कृत साहित्य में मुद्राराक्षस को राजनैतिक नाटक कहा जाता है।
↓ प्रथम जासूसी ग्रन्थ
→ दूसरी कृति - देवीचन्द्रगुप्तम
↓ रामगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त II तथा शकाधिपति की कहानी

विष्णु शर्मा-

कथा संग्रह - पंचतन्त्र
↓ प्राचीन भारत की अनेक कहानियों का संग्रह

→ रामायण और महाभारत हमें जिस रूप में प्राप्त होता है वह गुप्तकाल में ईसा की चौथी सदी में आकर लगभग पूरे हो चुके थे।

रामायण - रचना - वाल्मीकि - विशुद्ध संस्कृत भाषा में
↓
→ "रामायण में बुद्ध का उल्लेख हुआ है" (अयोध्या कांड)
→ मूल रूप से - 5 काण्ड, पहला व सातवाँ बाद में जोड़ा गया
↳ राम को अवतारी पुरुष माना गया

महाभारत - रचना - वेदव्यास
↓
मूल नाम - "जयसंहिता"
→ विश्व का सबसे विशाल महाकाव्य है।

→ महाभारत में रामायण की चर्चा है अर्थात रामायण महाभारत के पूर्व की रचना है।

पुराण :- अंतिम संकलन - गुप्त काल में
तात्पर्य - प्राचीन आख्यान

पुराणों की संख्या - 18

पुराणों में "पाँच विषय" की चर्चा -

- सर्ग — सृष्टि के उत्पत्ति की कहानी
- प्रतिसर्ग - सृष्टि के विनाश के पश्चात उसकी फिर से उत्पत्ति
- वंश - देवताओं या ऋषियों की वंशावली
- मनवन्तर - काल सूचक युगों तथा महायुगों का क्रम
- वंशानुचरित - सूर्यवंश तथा चन्द्रवंश दोनों राजवंशों का इतिहास

→ मनु मन या 'इच्छा' के प्रतीक है यानि इच्छा से ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। इस दौर के मनु दसवें मनु है जो वैवस्वत पुत्र मनु कहे कहलाते है।

अभिलेखीय स्रोत :-

समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति :- उसकी राजनीतिक उपलब्धियों की जानकारी देने वाला प्रथम अभिलेख

→ कौशाम्बी से इलाहाबाद के किले में अकबर द्वारा लाया गया।
→ प्रयाग प्रशस्ति के रचयिता - हरिषेण
→ यह अभिलेख संस्कृत भाषा के "चम्पू शैली" (गद्य + पद्य) में लिखा गया
→ समुद्रगुप्त के विजय अभियानों की जानकारी मिलती है लेकिन उनके कालक्रम की नहीं।
→ इस बात की जानकारी इस अभिलेख से प्राप्त 'नहीं' होती कि समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय का मेहरौली लौहस्तंभ :- (चन्द्र नामक राजा जिसका समीकरण चन्द्रगुप्त द्वितीय से जोड़ा गया है।)

→ दिल्ली से 9 मील की दूरी पर कुतुबमीनार के पास से प्राप्त, संस्कृत भाषा में तथा लिपि- गुप्त तिथि विहीन लेख।

→ खुले आसमान के नीचे होने के बावजूद जंगरहित बना हुआ है

→ इससे पता चलता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय "वैष्णव धर्मावलम्बी" था। इस पर गरूण अंकित है और विष्णु ध्वज की चर्चा है।

कुमारगुप्त का मंदसौर प्रशस्ति :- मंदसौर अभिलेख (मध्यप्रदेश)

रचयिता - कुमार गुप्त का दरबारी कवि - "वत्सभट्टी"

→ रेशम बुनकरों द्वारा मंदसौर में सूर्य मन्दिर के पुनर्निर्माण की जानकारी

स्कन्द गुप्त के भीतरी और गिरनार अभिलेख :-

→ "भीतरी स्तंभाभिलेख" - (गाजीपुर, उ०प्र०)
[हूणों के आक्रमण के बारे में जानकारी]

→ गिरनार / जूनागढ़ अभिलेख - सुदर्शन झील के बारे में

भानुगुप्त का एरण अभिलेख - सती प्रथा का उल्लेख करने वाला प्रथम अभिलेख

गुप्त कालीन सिक्के :-

सबसे बड़ा ढेर - भरतपुर जिले में बयाना नामक स्थान पर (राजस्थान)

→ प्राचीन भारत के इतिहास में सबसे ज्यादा सोने के सिक्के गुप्तों ने जारी किए थे।

→ गुप्त कालीन "सोने के सिक्के - "दीनार"
चाँदी के सिक्के" - रूपक }

संस्कृत भाषा में पहला	-	रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
चन्द्रगुप्त मौर्य का नाम बताने वाला पहला	-	रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
स्वयंवर प्रथा का उल्लेख करने वाला पहला	-	रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख
कालिदास का उल्लेख करने वाला प्रथम अभिलेख	-	पुलकेशियन द्वितीय का एहोल अभिलेख
सती प्रथा का उल्लेख करने वाला	-	भानुगुप्त का एरण अभिलेख

गुप्तकालीन शासक :- संस्थापक - श्रीगुप्त

चन्द्रगुप्त प्रथम :- (319-35 ई०) - गुप्त वंश का वास्तविक संस्थापक

राजधानी - पाटलिपुत्र

→ 319 ई० मे नया संवत "गुप्त संवत" चलाया

→ लिच्छवी की राजकुमारी कुमार देवी के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने के कारण वह अपने को "लिच्छवयः दौहित्र" कहता था।

→ अपने विवाह के उपलक्ष्य मे "सोने के सिक्के" जारी किया।

समुद्र गुप्त :- इसकी भी उपाधि - लिच्छवयः दौहित्र, "कविराज"

→ विजय अभियानों की जानकारी - "प्रयाग प्रशस्ति से"

→ विंसेंट आर्थर ने इसे 'भारत का नेपोलियन' कहा है।

→ सिक्के पर वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है।

→ इसने भी अश्वमेध यज्ञ कराए और "अश्वमेध पराक्रमांक" की उपाधि धारण की।

राम गुप्त :-

→ इसकी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को प्राप्त करने के लिए शकों का आक्रमण हुआ। इस घटना की जानकारी विशाखदत्त कृत "देवी चन्द्रगुप्तम्" नामक ग्रन्थ से प्राप्त होती है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' अन्य नाम - देवराज या "देवगुप्त"

→ परमभागवत की उपाधि उसके धर्मनिष्ठ वैष्णव होने की पुष्टि करता है।

→ चाँदी की मुद्रा का प्रचलन करने वाला पहला गुप्त शासक

→ दूसरी राजधानी - उज्जैनी (विद्या एवं संस्कृति का प्रसिद्ध केन्द्र)
इससे पहले विदिशा को दूसरी राजधानी ब...

→ नवरत्न :- (स

अमरसिंह वेतालभट्ट धन्वंतरि शंकु घटकपर क्षप...
कालिदास वराहमिहिर वररुचि (जैन...

→ शक विजेता कहा जाता है।

फाह्यान :-

→ चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में यह चीनी यात्री भारत आया।
प्रसिद्ध ग्रन्थ - 'फू-की-की'

→ चन्द्र के पाटलिपुत्र स्थित राजप्रासाद का दर्शन किया

कुमारगुप्त प्रथम (महेन्द्रादित्य) :- (414-454 ई०)

→ बिहार में पटना के निकट "नालन्दा विश्वविद्यालय" की स्थापना करवाया।

→ नीचे नालंदा विश्वविद्यालय की यात्रा ह्वेनसांग ने की थी। उस समय वहाँ का प्रधानाचार्य शीलभद्र था।

स्कंदगुप्त क्रमादित्य :- उपाधि - शक्रादित्य

→ इसके समय की घटनाओं की जानकारी - जूनागढ़/गिरनार और भीतरी स्तम्भ लेख से प्राप्त होती है

→ इसी के काल में मध्य एशियाई एक बर्बर जाति हूणों का आक्रमण हुआ। ये मंगोल जाति के थे जो सीथियनों की एक शाखा थी

→ काले हूणों का नेता - नेता एट्टिला
श्वेत हूण - एपथलाइट्स

→ चीनी यात्री 'सुंगयुन', जिसने भारत की 515-20 के बीच यात्रा की उसके अनुसार,

→ हूणों का पहला शासक - तिगिन (जिसने गांधार पर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित किया)

** → तोरमाण हूणों का प्रथम शासक था जिसने भारत के मध्यवर्ती भागों में अपना विजय अभियान किया था।

→ तोरमाण का पुत्र मिहिरकुल था। शैव धर्म का उपासक था। प्रारम्भ में बौद्ध धर्म का जिज्ञासु व्यक्ति था बाद में कट्टर विरोधी।

→ मिहिरकुल को पराजित करने का श्रेय - मालवा के शासक यशोवर्मन तथा मगध के शासक नरसिंह गुप्त बालादित्य को जाता है

→ गुप्त कालीन अभिलेखों में कुमार गुप्त द्वितीय का अभिलेख काफी महत्वपूर्ण है जो कि बुद्ध प्रतिमा पर उत्कीर्ण है।

गुप्त वंश का अन्तिम शासक - 'विष्णुगुप्त'

गुप्तकालीन सांस्कृतिक गतिविधियाँ :-

कला और साहित्य की दृष्टि से - **क्लासिकल युग तथा स्वर्णयुग**

→ प्राचीन भारत में मन्दिरों का निर्माण - सर्वप्रथम गुप्त युग में

→ पहले के मन्दिर सपाट थे बाद में शिखर युक्त मन्दिर बनने लगे

→ शिखर युक्त मन्दिर का पहला उदाहरण - देवगढ (दशावतार मन्दिर) झांसी

↳ गुप्त कालीन मन्दिरों में सर्वाधिक खूबसूरत

गुप्त कालीन मन्दिरों की विशेषताएं :-

→ अधिकांश मन्दिर पत्थर से निर्मित है। इसका अपवाद भितरगाँव (कानपुर उ०प्र०) व सिरपुर (म०प्र०) जो ईंटों द्वारा निर्मित है।

→ गुप्त कालीन मन्दिरों में द्वारपालों के स्थान पर - गंगा और यमुना की मूर्तियां है।

→ गंगा 'मकरवाहिनी' व यमुना को 'कूर्मवाहिनी' दिखलाया गया है।

देवगढ का दशावतार मन्दिर :-

→ निर्माण - सम्भवतः गुप्त काल के अन्तिम समय में

मूर्तियों तथा पौराणिक कथाओं का निरूपण, रामावतार एवं कृष्णावतार दोनों से सम्बन्धित दृश्य, इसके अतिरिक्त विष्णु के दशअवतारों का भी अंकन

नचनाकुठारा का पार्वती मन्दिर :- म०प्र० में अजयगढ के समीप

निर्माण - बलुआ पत्थर से,
यह भी पंचायतन शैली का मन्दिर है।

→ **मनियारमठ का मन्दिर** - राजगृह में

बेलनाकार शैली का महत्वपूर्ण मन्दिर, इसके निकट एक उभरतुमा स्तूप बना है।

नागोद (भूमरा) का मन्दिर :- म०प्र० में जबलपुर इटारसी रेलवे लाइन पर पंचायतन शैली का सर्वप्रथम मन्दिर

गुप्त कालीन चित्रकला :-

वात्सायायन ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'कामसूत्र' में भी चित्रकला की गणना 64 कलाओं के अन्तर्गत की है।

→ कालिदास ने इन्हें 'चित्राचार्य' कहकर पुकारा है।

चित्रकारी हेतु प्रयुक्त रंग :- (हरा, लाल, काला, पीला, सफेद, भूरा)

इसके अलावा नीला, गन्दे हरे रंग का प्रयोग किया जाता है।

'Lapis Lazuli' रंग को पर्शिया फारस से आयात किया जाता था।

चित्रकारी के लिए प्रयुक्त उपकरण
- ↳ तूलिका (जिससे रंग भरा जाता है)
- ↳ वर्तिका (रूपरेखा / खाका तैयार किया जाता है)

चित्रकारी की विधि

→ फ्रेस्को - चित्रकारी गीले प्लास्टर पर विशुद्ध रंगो का प्रयोग करके की जाती थी।

→ टेम्पेरा - सूखे प्लास्टिक पर मिश्रित रंगो का प्रयोग करके

अजन्ता की गुफाएं :- महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले मे

→ कुल - 29 गुफाएं - 16, 17, 19 गुप्त काल से सम्बन्धित

→ गुफा सं.-16 मे ही मरणासन्न राजकुमारी का चित्र अंकित है

→ गुफा सं.-17 मे 'जातक कथाओं' का सबसे बेहतरीन प्रदर्शन हुआ है।

→ गुफा -16 की एक दीवार पर 'अजातशत्रु और महात्मा बुद्ध' की भेंट का चित्र है।

⇒ अजन्ता की गुफाएं मुख्यत: 'बौद्ध धर्म' से सम्बन्धित हैं।

बाघ की गुफाएं :- म॰ प्र॰ के धार जिले मे विन्ध्यांचल पर्वत के समीप नर्मदा की सहायक नदी बाघमती से 2-3 किमी॰ दूरी पर
कुल - 9

→ यही पर 'बाघेश्वरी देवी' का प्राचीन मन्दिर है। स्थानीय लोग इन्हे 'पंचपाण्डव' के नाम से पुकारते हैं।

➔ अजंता के चित्रों का विषय प्रमुखत: 'धार्मिक' है। मनुष्य के लौकिक जीवन का चित्रण गौण है।

गुप्त कालीन मूर्तिकला :- गुप्त कालीन मूर्तिकला का जन्म मथुरा कला शैली से

गुप्त कालीन मूर्तिकला और मथुरा कला शैली मे मूलभूत अन्तर -

→ मथुरा कला शैली की मूर्तियों को सुन्दर बनाने के लिए नग्नता का प्रदर्शन हुआ है जबकि गुप्त कालीन मूर्तिकारों ने अपने मूर्तियों मे मोटे उत्तरीय वस्त्रों का प्रयोग किया है।

→ कुषाण कालीन मूर्तियों मे प्रभामण्डल सादगी के लिए हुए है वही गुप्त काल मे सुसज्जित प्रभामंडल बनाए गए हैं।

→ गुप्त कालीन मूर्तिकला के केन्द्र - मथुरा, सारनाथ और पाटलिपुत्र

बौद्ध धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ :-

→ महात्मा बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं मे धातु व पाषाण मूर्तियों का निर्माण हुआ है।

→ सर्वाधिक प्रसिद्ध मूर्ति - भागलपुर जिले मे सुल्तानगंज नामक स्थान से प्राप्त 7½ फीट ऊची कांसे की बनी बुद्ध प्रतिमा

→ इस मूर्ति को वर्तमान मे 'बर्किंघम पैलेस' मे रखा गया है।

महात्मा बुद्ध की बैठी हुई मूर्तियाँ :-

1- **अभय की मुद्रा :-** इसमें बुद्ध पद्मासन मुद्रा में बैठे हैं, दायाँ हाथ अभय की मुद्रा में उठा है। इसे आशीर्वाद की मुद्रा कहा जाता है।

2- **समाधि की मुद्रा :-** इसमें बुद्ध ध्यान मुद्रा में हैं। उनके दोनों हाथ गोद में इस प्रकार रखे हैं कि उनकी हथेली एक दूसरे पर टिकी है।

3- **भूमि स्पर्श की मुद्रा :-** इस मुद्रा का अभिप्राय है कि वे काम के देवता मार पर विजय प्राप्त करने के प्रमाण में पृथ्वी को गवाह बना रहे हैं।

4- **उपदेश की मुद्रा :-** दोनों हाथ इस प्रकार सीने से लगे हैं कि दाँया हाथ का कनिष्ठा व अंगूठा बाएं हाथ की माध्यमिका को छू रहे हैं।

बुद्ध की खड़ी मूर्तियाँ :-

अभय मुद्रा :- दाया हाथ अभय की मुद्रा में, जबकि बाएं हाथ से वस्त्र पकड़े हैं।

वरद मुद्रा :- उत्सर्जन की मुद्रा है, बाल घुंघराले, चेहरे पर शान्ति करुणा दया और आध्यात्मवाद की स्पष्ट झलक है।

ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ :-

→ जिन देवी देवताओं की मूर्तियों का निर्माण हुआ उसमें शिव तथा विष्णु का महत्वपूर्ण स्थान है।

→ देवगढ़ के दशावतार मन्दिर में विष्णु को शेषनाग की शैय्या पर सोते हुए दिखलाया गया है।

→ भिलसा (म०प्र०) के नजदीक उदयगिरि गुफा के मुहाने पर दांतों से पृथ्वी उठाए वराह की प्रतिमा का निर्माण किया गया है।

गुप्त युगीन प्रशासन :-

→ इस काल के प्रशस्तिकारों ने अपने-अपने संरक्षक शासकों की तुलना यम, कुबेर आदि देवताओं से की है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि राजत्व का दैवीय उत्पत्ति का सिद्धान्त इस काल में स्थापित हो चुका था। इसका सर्वप्रथम उल्लेख मनुस्मृति में मिलता है जिसका बाणभट्ट ने स्पष्टतः तिरस्कार किया है।

→ 'सामंतवाद' का बीजारोपण इस काल में ही चुका था, यद्यपि इसके लिए सामंत शब्द का प्रयोग नहीं हुआ है।

→ अधिकारियों की वंशानुगत बनाए जाने के प्रमाण मिलते हैं।

→ दण्ड व्यवस्था काफी उदार थी, मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था।

→ ये वंशानुगत राजतंत्रीय शासन की स्थापना अवश्य की गई थी परन्तु शासन के 'ज्येष्ठ उत्तराधिकार' का चलन नहीं था।

→ 'अमात्य' समान रूप से 'अधिकारियों' का पर्यायवाची माना गया है। यह गुप्त कालीन शासकों द्वारा गठित अधिकारी वर्ग था। इस वर्ग का सामूहिक नाम - अमात्य या कुमारामात्य था।

प्रशासनिक ईकाई:-

→ साम्राज्य का विभाजन जिस सबसे बड़ी ईकाई में किया गया उसे देश कहा गया।

→ इस देश का अन्य नाम-'भुक्ति'

→ पश्चिमी भारत के प्रांतों को - देश → प्रधान - गोप्ता

→ पूर्वी भारत के प्रांतों को - भुक्ति → प्रधान - उपरिक

→ देश के बाद की ईकाई - विषय (जिले के समान) → जिलाधिकारी - विषयपति

↓ प्रशासक → जिला परिषद द्वारा संचालित

↓ सदस्य - महत्तर

इसके सदस्य निम्नलिखित होते थे-

नगर श्रेष्ठि → उद्यम पतियों का प्रमुख

सार्थवाह → व्यवसायियों का प्रतिनिधि

प्रथम कुलिक → शिल्पकारों का प्रतिनिधि

प्रथम कायस्थ → लिपिकों का प्रतिनिधि

→ नगर को 'पुर' कहा जाता था।

→ कई गावों के समूह को 'पेठ' कहा जाता था। जिसके प्रधान को आयुक्त कहा जाता था।

न्याय व्यवस्था :-

न्याय का सर्वोच्च अधिकारी - शासक → आसन को धर्मासन कहते थे

→ न्यायालय को न्यायाधिकरण या धर्म-न्यायाधिकरण कहते थे।

→ शासक की अनुपस्थिति में न्याय का कार्य - 'प्राड्विवाक'

गुप्त कालीन आय के स्रोत :-

सबसे अधिक आय - भूमि कर से

→ राजा उपज का '1/6 भाग' कर के रूप में लेता था।

→ कर के रूप में प्राप्त होने वाली आय - भाग

→ राजा को भेंट स्वरूप प्रदान किए जाने वाला धन - भोग

→ भूमि कर किसान 'हिरण्य' अर्थात नगद अथवा 'मेय' अनाज के रूप में दोनों प्रकार से दे सकते थे।

→ 'विष्टि' का चलन था जो एक प्रकार का श्रमदान/बेगार होता था।

⇒ गुप्तकाल में व्यापारियों तथा शिल्पियों के चार संगठन थे-
निगम, पूग, गण, श्रेणी

हर्षवर्धन :-

→ 6ठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में और सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक थानेश्वर (हरियाणा) की वर्धन वंश या पुष्यभूति वंश एक प्रमुख राजनीतिक शक्ति थी।

→ इस वंश का संस्थापक - पुष्यभूति

→ वर्धन वंश की शक्ति और प्रतिष्ठा का संस्थापक - प्रभाकरवर्धन

→ राज्यवर्धन के बहनोई की हत्या ~~की~~ कन्नौज के शासक ग्रहवर्मा की, मालव राज देवगुप्त द्वारा

→ राज्यवर्धन ~~की~~ की हत्या - देवगुप्त और शशांक

→ राज्यवर्धन के मृत्यु की खबर हर्षवर्धन को कुंतल के द्वारा दी गई
बासखेड़ा और मधुबन अभिलेख से इस बात की जानकारी मिलती है।

→ हर्षवर्धन की रचनाएं :- प्रियदर्शिका, नागानंद और रत्नावली

→ हर्षवर्धन की उपाधि - 'शिलादित्य'

→ हर्षवर्धन ने ~~अ~~ आचार्य दिवाकर मित्र की सहायता से अपनी बहन राज्यश्री को खोज निकाला।

→ हर्ष ने पुंड्रवर्धन के युद्ध में शशांक को पराजित किया।

→ हर्ष पुलकेशिन द्वितीय से युद्ध में पराजित हुआ था।

→ हर्षवर्धन ने थानेश्वर की जगह अपनी राजधानी 'कन्नौज' बनाया

→ कामरूपपुर के राजा भास्कर वर्मा ने अपना दूत 'हंसवेग' को हर्ष के दरबार में भेजा था।

→ प्रयाग में आयोजित 'मोक्ष परिषद' में 18 अधीनस्थ राजाओं ने भाग लिया था

→ इसी के काल में 'ह्वेनसांग' ने भारत की यात्रा की थी।
- → तीर्थयात्रियों का राजकुमार
- → रचना - सी यू की

→ हर्ष के दरबार में - बाणभट्ट, मयूर और मातंग दिवाकर रहते थे।

गुप्तोत्तर काल - उत्तर भारत का इतिहास :-

→ सातवीं शताब्दी के प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी के तुर्क आक्रमण तक कन्नौज उत्तर भारत की राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र रहा।

→ ईश्वरी प्रसाद ने इस काल को "राज्यों के अन्दर राज्यों का काल" कहा है

→ इस काल का महत्वपूर्ण परिवर्तन - सामन्तवाद का उदय
जिसने भारतीय इतिहास को प्राचीन काल से मध्यकाल में रूपान्तरित किया।

मालवा के प्रतीहार वंश :- संस्थापक - हरिश्चन्द्र

वास्तविक संस्थापक - नागभट्ट प्रथम

इस वंश का पहला शक्तिशाली शासक - वत्सराज
इसी के नेतृत्व में पहली बार प्रतीहारों ने त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की।

नागभट्ट द्वितीय :- वत्सराज के बाद शासक बना

मिहिर भोज :-
इसने उज्जैन के स्थान पर 'कन्नौज' को अपनी राजधानी बनाया।

→ इसी के शासनकाल में अरबी यात्री 'सुलेमान' ने भारत की यात्रा की इसने मिहिर भोज को 'अरबों का घोर शत्रु' बतलाया है।

→ मिहिर भोज वैष्णवाद का संरक्षक शासक था।

→ इसकी उपाधि - 'आदि वराह'

महेन्द्र पाल प्रथम :-

→ इसके दरबार में 'काव्य मीमांसा' और 'कर्पूर मंजरी' के लेखक 'राजशेखर' निवास करते थे।

महिपाल :- इसके काल में दसवीं शताब्दी में 'अलमसूदी' नामक अरब यात्री ने भारत की यात्रा की।

→ अलमसूदी ने गुर्जर-प्रतिहार वंश को अलगुर्जर तथा राजा को बौरा कहा है।

अन्हिलपाटन या अन्हिलवाद के चालुक्य सोलंकी वंश :-

गुजरात के चालुक्य या सोलंकी राजपूत थे। उनके राज्य की राजधानी 'अन्हिलवाड़' या 'अन्हिलपाटन' थी।

मूलराज प्रथम :- इस वंश का संस्थापक (कट्टर शैव शासक)

→ चामुण्डराय को शासक बनाकर स्वयं सिंहासन का परित्याग किया

भीम प्रथम :-

→ इसके शासनकाल मे 'महमूद गजनवी' का (1025-26 ई०) मे सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण।

बाद मे कुमार पाल ने 'सोमनाथ मन्दिर' का पुनर्निर्माण करवाया।

→ इसके बाद का प्रसिद्ध शासक 'कर्ण' हुआ जिसने नया शहर कर्णावती बसाया। जो कि वर्तमान मे 'अहमदाबाद' के नाम से जाना जाता है।

जयसिंह सिद्धराज :-

→ इसके दरबार मे प्रसिद्ध जैन विद्वान 'हेमचन्द्र' निवास करता था

→ जयसिंह ने अनेक मन्दिरों का निर्माण करवाया जिसमे सबसे प्रमुख 'सिद्धपुर का रुद्र महाकाल मन्दिर' है

कुमार पाल :- एक गणिका का पुत्र था।

→ प्रसिद्ध जैन आचार्य हेमचंद्र के प्रभाव मे आकर जैन धर्म को अपना लिया

→ जैन धर्म अंगीकार करने बाद - उपाधि - परम अर्हत

→ जय सिंह नामक कवि ने कुमार पाल चरितम नामक काव्य मे उसका यशोगान किया है।

मूल राज द्वितीय :-

→ इसी के काल मे 'मुहम्मद गोरी' का भारत पर आक्रमण हुआ।

→ भीम द्वितीय ने 1178 मे मुहम्मद गोरी को पराजित किया

रायकर्ण :- 'गुजरात का अन्तिम हिन्दू शासक'

→ इसी के शासनकाल मे अलाउद्दीन ने गुजरात पर आक्रमण किया।

→ इसकी पत्नी को दिल्ली ले आया और बाद मे उससे शादी की। (कमला)

कराया गया।

अजमेर या शाकंभरी या सपादलक्ष देश के चौहान वंश :-

अजमेर के चौहान वंश का संस्थापक - वसुदेव

→ अजयराज द्वितीय ने 'अजमेर' शहर की स्थापना की।

पहला महत्वपूर्ण शासक - विग्रहराज चतुर्थ बीसलदेव
↓
अजमेर में संस्कृत मठ - अढ़ाई दिन का झोपड़ा

चौहान वंश का सबसे महान शासक - पृथ्वीराज तृतीय चौहान
↓
चंदेल शासक परमार्दिदेव को रानि अभि में हराया

→ पृथ्वीराज चौहान के समय मुहम्मद गोरी का आक्रमण हुआ

→ जयानक भट्ट ने पृथ्वी राज तृतीय के दरबार में रहते हुए पृथ्वीराज विजय नामक ग्रन्थ की रचना की।

धारानगरी के परमार वंश :-

पहला व्यक्ति उपेन्द्र (कृष्णराज)

परमारों की प्रा० राजधानी - उज्जैनी थी जिसे बाद में धार (म०)

→ ये पहले राष्ट्रकूटों या प्रतिहारों के सामंत थे।

वाक्पति मुंज :-

→ स्वतंत्र परमार राज्य की स्थापना करने वाला - सीयक द्वितीय या हर्ष

→ इस वंश का प्रथम प्रतापी शासक - वाक्पति मुंज
↓ उपाधि - कविवृष

राजा भोज :-

उपाधि - 'कविराज'

→ परमार वंश का सबसे प्रतापी राजा

→ इसने 'पतंजलि' के योगसूत्र पर भाष्य लिखा

→ चित्तौड़ में त्रिभुवन नारायण का मन्दिर निर्मित कराया।

→ 'भोजपुर' नामक शहर बसाया जो वर्तमान में (भोपाल) है

→ इसके निर्माण कार्य का विवरण 'उदयपुर प्रशस्ति' में मिलता है

→ धारानगरी में भोजशाला नामक 'सरस्वती मन्दिर' का निर्माण कराया

बंगाल के पाल वंश :-

संस्थापक - गोपाल

धर्मपाल :- पाल वंश का पहला महान व शक्तिशाली शासक

↳ उपाधि - परम सौगात

→ इसी के नेतृत्व मे पालो ने पहली बार 'त्रिपक्षीय संघर्ष' मे भाग लिया

→ धर्मपाल ने 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की।

→ सोमपुरी मे 'बौद्ध विहार' की स्थापना की तथा नालन्दा के बौद्ध विहार का जीर्णोद्धार करवाया।

देवपाल :- इसे बौद्ध धर्म का पुर्नसंस्थापक कहा जाता है

महिपाल प्रथम :- इसे पाल का द्वितीय संस्थापक कहा जाता है।

→ पाल वंश का अन्तिम उल्लेखनीय शासक - रामपाल

इसके समय कैवर्त मछुआरों का विद्रोह

→ पाल वंश बौद्ध धर्म को संरक्षण देने वाला अन्तिम महान वंश था।

बंगाल के सेन वंश :-

राजधानी - राढ़ (उत्तरी बंगाल)

इस वंश का संस्थापक - सामंत सेन

विजय सेन :- प्रथम ऐतिहासिक शासक

बल्लाल सेन :- प० बंगाल मे कुलीनवाद नामक सामाजिक आन्दोलन चलाया

लक्ष्मण सेन :- इसी के शासन काल मे तुर्क आक्रमणकारी मु० बिन बख्तियार खिलजी ने लखनौती पर आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया।

कन्नौज के गहड़वाल वंश :-

कन्नौज का अन्य/पुराना नाम - महोदया

इस वंश की स्थापना - यशोविग्रह

कन्नौज मे गहड़वाल वंश की स्थापना - चंद्रदेव

↳ बनारस को दूसरी राजधानी बनाया

→ इस वंश का महानतम शासक - गोविन्द चन्द्र

मंत्री - लक्ष्मीधर → रचनाएं

↳ कृत्यकल्पतरु

↳ कृत्यक्रम

→ इस वंश का अन्य चर्चित शासक - जयचन्द्र

→ जयचन्द्र को मुहम्मद गोरी ने 1194 ई० मे चन्दावर के युद्ध मे पराजित करके मार डाला।

कश्मीर का इतिहास :-

जानकारी - कल्हण के राजतरंगिणी से

कार्कोट वंश :- संस्थापक - दुर्लभवर्द्धन

→ इस वंश के शासक प्रतापादित्य ने - प्रतापपुर नामक नगर की स्थापना की

→ अन्य एक शासक - मुक्तापीड ललितादित्य था जिसने

→ सूर्य के प्रसिद्ध मार्तंड मन्दिर

→ कश्मीर में परिहास पुर नामक नगर की स्थापना

उत्पल वंश - संस्थापक - अवंतीवर्मन

↳ वितस्ता नदी से सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण कराया।
(झेलम)

लोहार वंश - संस्थापक - संग्राम राज

↓ इसको कश्मीर का नीरो ' कहा जाता है।

खजुराहो के चन्देल वंश :- संस्थापक - नन्नुक

→ ये गुर्जर प्रतिहारों के सामंत थे।

→ प्रथम विजेता सम्राट - यशोवर्मा

↳ खजुराहो में चतुर्भुज मन्दिर का निर्माण

→ इस वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक - विद्याधर

↓ महमूद गजनवी का कुद्ध प्रतिकार

कलात्मक उपलब्धियाँ :-

→ खजुराहो में नागर शैली में 30 मन्दिरों का निर्माण
(जैन, शैव और वैष्णव से सम्बंधित)

→ कांदरिया महादेव का मन्दिर - निर्माण - विद्याधर

→ चंदेलों द्वारा निर्माण कराया गया सबसे प्रसिद्ध दुर्ग -

कलिंजर का दुर्ग

गुप्तोत्तर काल - दक्षिण भारत का इतिहास :-

कांची के पल्लव वंश :-

पल्लव वंश का संस्थापक - 'सिंह विष्णु' (575-600ई०)
दरबार मे - भारवि
रचना (किरातार्जुनीयम)

- पल्लव वंश का प्रथम महान शासक - महेन्द्रदेववर्मन
  - प्रारम्भ मे जैन धर्म का अनुयायी   शैली - मण्डप
  - बाद मे नयनार सन्त अप्पार के प्रभाव मे आकर शैव धर्म को अपना लिया।
  - महेन्द्र वर्मन प्रथम ने 'मत्तविलास प्रहसन' नामक एक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की।
  - महेन्द्र वर्मन की प्रिय उपाधि - विचित्र चित्त, गुणभर, मत्तविलास

- महेन्द्र वर्मन के पश्चात शासक - नर सिंह वर्मन प्रथम - उपाधि - वातापिकोंड
  महामल्ल/मामल्ल
  - नरसिंह वर्मन - ने महाबली पुरम या मामल्लपुर नामक एक शहर बसाया था
  - मण्डप और रथ का निर्माण (सप्त पैगोडा) → सबसे छोटा - द्रौपदी, सबसे प्रसिद्ध धर्मराज रथ
- अगला शक्तिशाली शासक - नरसिंह वर्मन द्वितीय
  - → कांची का कैलाश मन्दिर
  - (UNESCO) → 'महाबलीपुरम' के तटीय या शोर मन्दिर

- पल्लवों के ही काल मे मन्दिर निर्माण की "द्रविड़ कला शैली" का विकास हुआ।
- पल्लवों की राजकीय भाषा - 'संस्कृत'
- पल्लवों के काल मे दक्षिण भारत मे 'देवदासी' प्रथा काफी लोकप्रिय थी।
- * दक्षिण भारत मे शैव (नयनार) और वैष्णव (अलवार) संतो का आगमन
- पल्लवों के काल मे कांची घटिका विद्या और कला का केन्द्र था।

तंजौर के चोल वंश :-

पल्लवों के सामन्त के रूप मे चोल वंश का उदय - 'विजयाचल के नेतृत्व मे'
चोलों की प्राचीन राजधानी - 'उरैयूर'
बाद मे नौवीं शताब्दी मे - तंजौर

विजयाचल - उपाधि - (नरकेसरी)
→ तंजौर मे निशुंभसूदनी दुर्गा मन्दिर का निर्माण

आदित्यराज प्रथम - उपाधि - कोदंडराम

राजराज प्रथम :-
- उत्तरी श्री लंका का अभियान → पोलोन्नरुवा को नई राजधानी (अनुराधापुर के स्थान पर)
- * तंजौर के बृहदेश्वर मन्दिर का निर्माण

(यह द्रविड़ कला शैली का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर है)

राजेन्द्र प्रथम :- (पण्डित चोल भी कहा जाता था)

- पूरे श्री लंका को अपने राज्य में मिला लिया।
- उत्तर भारत की ओर गंगा तक अभियान
- 'चोल गंगम' नामक तालाब का निर्माण कराया (गंगा जल भर कर)
- गंगईकोंडचोलपुरम नामक शहर की स्थापना
  - शिव मन्दिर का निर्माण → 'बृहदेश्वर मन्दिर'

कुलोत्तुंग प्रथम : → (शुगंतविर्त / कर हटाने वाला)

- चीनी शासक ताइत्सू के दरबार में अपना एक व्यापारिक मंडल भेजा
- विजयबाहु के नेतृत्व में श्रीलंका स्वतंत्र

कुलोत्तुंग द्वितीय :-

- गोविन्द राज की मूर्ति को तिरुपति मन्दिर से समुद्र में फेंकवा दिया

(इस मूर्ति को रामानुजाचार्य (वैष्णव धर्म के उपासक) ने खोज कर फिर से स्थापित किया)

कुलोत्तुंग तृतीय :-

- दरबारी कवि - 'कंबन'
  - रचना - तमिल रामायण

⇒ चोल वंश का अंतिम शासक - राजेन्द्र तृतीय

- → चोलों की 'राजकीय भाषा' - तमिल
- → चोल काल में सोने के सिक्कों को 'काशु' कहकर पुकारा जाता था।
- → चोलों के सामुद्रिक अभियानों के कारण 'बंगाल की खाड़ी' को 'चोलों की झील' कहा जाने लगा था।
- → चोलों का प्रतीक चिन्ह - 'बाघ'
- → चोल राजा शैव मत के उपासक थे।

चोल साम्राज्य कई प्रशासनिक इकाइयों में विभक्त था।

सम्पूर्ण राज्य को - राज्यम या राष्ट्रम
↓
प्रान्तों में - मंडलम - संख्या - 8
↓
कोट्टम / वलनाडु
↓
नाडु में
↓
कुर्रम

→ चोलों का स्थानीय स्वशासन पूरी तरह से स्वायत्त था। चोल कालीन शासक परांतक प्रथम के उत्तरमेरूर अभिलेख से इस बात की जानकारी मिलती है।

बादामी के चालुक्य वंश :-

संस्थापक - जय सिंह

⇒ बादामी के चालुक्य कर्नाटक वासी थे और उनकी भाषा कन्नड़ थी।

→ इस वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक - पुलकेशिन प्रथम

→ **पुलकेशिन द्वितीय** :- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक
- राजधानी - वातापी या बातापी (कर्नाटक)
- उपलब्धियों की जानकारी - 'एहोल प्रशस्ति' ↓ रचना - रविकीर्ति (दरबारी कवि)
- ईरान के शासक खुसरो द्वितीय के साथ मित्रता पूर्ण सम्बन्ध

→ वातापी के चालुक्यों मे सबसे अधिक समय तक राज्य करने वाला - "विजयादत्त"

→ चालुक्यो ने ही मन्दिर निर्माण की 'बेसर शैली' को जन्म दिया

⇒ 'एहोल' को मन्दिरो का शहर कहा जाता है।

मान्यखेट के राष्ट्रकूट :-

संस्थापक - दन्तिदुर्ग, राजधानी - मान्यखेट

→ ये बादामी के चालुक्यो के सामंत थे।

कृष्ण प्रथम :- राष्ट्रकूटों का प्रसिद्ध शासक
- एलोरा के कैलाश मन्दिर का निर्माण
  - बेसर शैली का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर

ध्रुव :-
- इसी के काल मे राष्ट्रकूटो ने त्रिपक्षीय संघर्ष (पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट) मे पहली बार हिस्सा लिया।

गोविन्द तृतीय :- इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक
- प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया।

अमोघवर्ष :-
- जैन धर्म के स्यादवाद का अनुयायी
- इसके गुरु - जैन हरिवंश - इन्होंने अमोघवर्ष को लक्ष्मी का भक्त बताया है।
- इसके काल मे राष्ट्रकूटों ने त्रिपक्षीय संघर्ष मे भाग नही लिया।
- रचना - कवि राज मार्ग (कन्नड़ भाषा मे)
- ~~मान्य~~ मान्यखेट नगर बसाया

→ राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय के शासन काल मे अलमसूदी ने भारत की यात्रा की।

एलोरा :- महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले मे

→ एलोरा शैलकृत गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है, कुल -34 गुफा

1- 12 बौद्धो
13- 29 - हिन्दुओं
29- 34 - जैनियो
} गुफाए थोड़े - थोड़े अन्तर पर बनी हुई है।

गुफा संख्या -16 सबसे प्रसिद्ध

→ इसमे विश्वविख्यात कैलाश मन्दिर है

→ कृष्ण I द्वारा

→ बेसर शैली का सर्वश्रेष्ठ मन्दिर

गुप्तोत्तर काल - मंदिर निर्माण की शैलियां :-

→ मंदिरो का निर्माण सर्वप्रथम गुप्त काल मे किया गया।

नागर कला शैली :- सर्वप्रथम नगर मे इस कला शैली का विकास

विस्तार :- हिमालय से विंध्य पर्वत माला तक के भाग मे

मुख्यत: मध्य प्रदेश मे

अत: इस शैली को विशेषत: 'उत्तर भारत' की शैली कहा जाता है।

द्रविड़ कला शैली :-

कृष्णा नदी से कुमारी अंतरीप तक

इसे 'दक्षिण भारत की शैली' कहा जाता है।

बेसर कला शैली :-

नागर और द्रविड़ कला शैली का 'मिश्रण'

इसे 'चालुक्य शैली' भी कहा जाता है।

गुप्तोत्तर काल - चोल प्रशासन :-

→ इस वंश के राजाओ और रानियों की मूर्तियां मन्दिरों मे स्थापित करके उनकी पूजा की जाती थी।

ऐसा माना जाता है कि 'दैवीय राजत्व का सिद्धान्त' यहाँ पर प्रचलित हो रहा था।

सम्पूर्ण सत्ता का स्रोत - राजा → (पद- पैतृक)

→ चोल सम्राटों के आदेशों को 'तिरुवाक्य केलि' कहा जाता था।

→ 'कांची' चोलों की उपराजधानी थी।

प्रशासकीय अधिकारी :-

राजनैतिक विषयों पर एक परामर्शदात्री सभा - उडनकुट्टम

वरिष्ठ पदाधिकारियों को - पेरुन्दरम

छोटे अधिकारियों को - शेरुन्दरम

प्रशासन की इकाइयाँ -

राज्य → मण्डल/प्रान्त → कोट्टम/वलनाडु → नाडु → कुर्रम (ग्राम समूह)

प्रशासन की सबसे छोटी इकाई - ग्राम

सैन्य व्यवस्था :-

सेनापति को - क्षत्रिय शिखामणि

चोल सम्राट के निजी अंगरक्षक दल को - वेलैक्कार

चोल सेना की छावनी को - कड़गम

न्याय व्यवस्था :-

राज्य का सर्वोच्च न्यायधीश - राजा

चोल अभिलेख के धर्मासन का तात्पर्य - राजा का न्यायालय

राजा का निर्णय - धर्मासन भट्ट

आय व्यय की व्यवस्था :-

आय का मुख्य स्रोत - भू-राजस्व

अन्य कर -

आयम - राजस्व कर

मरमज्जाडि - वृक्ष कर

कडिमय - लगान कर

मनैइरै - गृह कर

स्थानीय स्वशासन :-

तीन प्रकार के गाँव -

प्रथम - उर (मिश्रित आबादी या सभी जाति के लोग)

द्वितीय - सभा (यहाँ केवल ब्राह्मण निवास करते थे)

तृतीय - नगरम (मुख्य रूप से व्यापारी निवास करते थे)

उर → कार्यकारिणी सदस्य को आलुंगणम

सभा → इसे चोल साक्ष्यों में पेरुगुर्रि कहा गया है

इसके सदस्यों को - पेरुमक्कल

नगरम → प्राय: व्यापारिक केन्द्रों के प्रबंध हेतु।